प्रस्तावित शौध – कार्य की रूपरेखा

डॉ. बी आर अम्बेडकर के विचारो की वर्तमान में प्रासंगिकता

Current relevance of Dr. B.R. Ambedkar's Thoughts

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय, जयपुर

(कला संकाय के अन्तर्गत(कला संकाय के अन्तर्गत)

पीएच.डी. (इतिहास) शौध–उपाधि पंजीयन के लिए प्रस्तुत सार–संक्षेप

''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ''

(SYNOPSIS)

2021

शोध निर्देशक

डॉ. ललित कुमार पाण्डेय

विभागध्यक्ष – इतिहास

ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय

जयपुर (राजस्थान)

शौधार्थी

महेश कुमार

1. **(Name of Scholar)** :- **Mahesh Kumar**

शोधार्थी का नाम :– **महेश कुमार**

2. **शोध कार्य का शीर्षक** :– **डॉ. बी.आर. अम्बेडकर के विचारों की वर्तमान में प्रासंगिता**

Title of Research Work :-

1. **प्रस्तावित शोध कार्य का परिचय :–**

डॉ. भीमराव अम्बेडकर का जन्म 14 अप्रेल 1891 को मध्यप्रदेश के रत्नागिरी जिले में मलू नाम स्थन पर हुआ था। मलू इंदौर नगर के निकट है। उनके पिता का नाम रामजी राव तथा माता का नाम भीमाबाई था। पिता सेना में सूबेदार थे। अम्बेडकर अपने माता–पिता की चौहदवी संतान थे। उनसे पहले जन्में भाई–बहनों में से केवल दो भाई और दो बहने जीवित थी, अन्य की मृत्यु हो चुकी थी। उनके एक भाई का नाम आनन्दराव था, दूसरे का बसंतराव, एक बहन का नाम मंजुला था और दुसरी का तूलसी।

डॉ. भीमराव का जन्म महार जाति में हुआ था। भारत के सारे अस्पृश्य समाज में महार जाति मजबूत कद–काठीवाली, जोरदार आवाजवाली, चमकीली चमडीवाली, गुण से बुद्विमान और कृति से लडाकू दिखाई देती है। कुछ विद्वानों का कहना है कि महाराष्ट्र के मूलनिवासी महार ही थे और इन्ही के नाम पर इस राज्य का नाम महाराष्ट्र पडा। महार शब्द की व्युत्पत्ति कुछ लोग इस तरह करते है – महा+अरि = बडा दुश्मन। ईस्ट इन्डिया कंपनी की बंबई सेना के लिए कम्पनी सरकार ने महारो के दल बनाए थे।

सन 1890 तक सूबेदार रामजी और भीमाबाई की 13 संताने पैदा हुई। उनमें से 6 संताने जीवित रही, शेष संतानें मर गई। एक दिन महू में एक असाधारण घटना घटी। रामजी के एक बैरागी चाचा साधू जत्थे के साथ महू आ गए और उन्होनें रामजी को आर्शीवाद दिया – अपने कर्तव्य से इतिहास पर चिरंतन छाप डालकर अपने वंश का नाम अमर करने वाला एक पुत्र तुम्हारे घर में पैदा होगा। यह आर्शीवाद सुनकर सूबेदार दंपती को काफी प्रसन्नता हुई। दोनो धर्मपरायण और वृतधारी थे। चौदहवी संतान के रूप में भीमराव का जन्म हुआ।

बचपन में भीमराव को बहुत अपमान सहना पडा अपनी जाति की वजह से। भीमराव के भाई–बहन तो अब तक जान चुके थे की वे अछूत है और उन्हे लोग समाज में इज्जत नही देते। भमीराव अभी छोटे थे जब उन्होने ये सब देखा तो उन्हे बडी हैरानी हुयी। बचपन से ही भीमराव में चीजों को गहराई से देखने और जानने की इच्छा तीव्र थी। वे इस सच्चाई से अनजान थे कि जिस परिवार और जाति में उन्होनें जन्म लिया है, वह भारतीय समाज में अछूत है और उन्हे सब बच्चों के साथ हिल–मिलकर खेलने तथा उन्हे दोस्त बनाने का अधिकार नहीं है। भीमराव जब 6 वर्ष के हुए तो उनकी माँ

भीमाबाई ने, रामजीराव से भीत का दाखिला स्कूल में कराने के लिए कहा। रामजीवराव पूरे आठ दिन की छूटटी लेकर भीम के दाखिले के लिए प्रत्येक स्कूल में गए किन्तू कोई वाला राजी नहीं हुआ, अछूत जो है।

एक हेडमास्टर बडी मुश्किल से तैयार प्रवेश देने के लिए किन्तू उसने एक शर्त रखी, आपके लड़के का दाखिला तो कर लूंगा, परन्तु उसे बडी जाति के बच्चों के साथ नहीं बैठा सकता। उसे अपनी टाट पट्टी साथ लानी होगी और कक्षा की दहलीज पर जहाँ बच्चे अपने जूते उतारते है, वहाँ बेठकर पढना पडेगा। ये सुनकर भीमराव ने अपने पिता से कहा मेरा दाखिला करवा दो। मैं जूतों की जगह बैठकर पढ लूंगा। भीम की पढाई शुरू हो गयी। वह रोजाना अपनी टाट–पटटी साथ लेकर आता, उसे बिछाकर जूतो की जगह बैठकर पढता। आधी छुटटी में सबसे अलग बैठकर दूसरी और मुह करके अपना खाना खत्मक रना। इस प्रकार भीम ने पहली से पांचवी कक्षा अच्छे अंकों से पास की क्योंकि भीम पढने में बहुत होशियार था जिसकी तारीफ हेडमास्टर भी उनके पिता से करता था। किन्तू इसी दौरान भीम की माँ की तबीयत खराब हो गयी। कोई भी वैध मां के ईलाज के लिए उनके घर नहीं आया, जिससे भीम की मां की मृत्यु हो गयी। मां की मृत्यु का भीम के जीवन पर काफी प्रभाव पडा।

भीम ने पांचवी कक्षा में प्रथम श्रेणी पायी थी। भीम ने हेडमास्टर बहुत खुश थे उन्होने भीम का प्रमाण पत्र देते समय उसमे पूरा नाम लिखा भीमराव अम्बेडकर। पिता रामजी राव न इसे ब्राह्ाण का आर्शीवाद मानकर खुशी जाहीर की। इसके बाद पिता ने अपनी पीतल की भारी परात बेचकर जो रूपये आये उनसे भीम का दाखिला आगे की पढाई के लिए एलकिंस्टन हाई स्कूल में करा दिया। यहां लडके उन्हे भीम कहते थे। यहां भी उन्हे अपनी जाति की वजह से कई अपमान सहन करने पडे। सन् 1906 में पिताजी ने भीखू वालंगकर की बेटी रमाबाई के साथ भीमराव की शादी कर दी। सन् 1907 में उन्होने 750 में से 382 अंक लेकर हाई स्कूल की परीक्षा पास की। नवंबर 1912 में भीमराव के पत्नी रमाबाई के यशवंत नाम पुत्र का जन्म हुआ। जनवरी 1913 में भीम ने बी.ए. पास कर ली। बडौदा के महाराज की सिफारिश पर भीम को सेना में लेफ्टीनेंट के पद पर नियुक्ति मिल गयी।

भीमराव लेफ्टीनेंट के रूप में बडौदा की रियासत अपनी सेवाएं दे रहे थे। एक दिन उन्हे तार मिला की पिताजी की तबीयत खराब है वे बीमार है। भीम ने अपने बडे अफसर से छूटटी मांगी किन्तु उसने छुटटी देने से मना कर दिया, फिर भीम ने नौकरी से त्यागपत्र देकर, अपने पिताजी के पास चले गए। भीम ने अपने पिता का बहुत ईलाज कराया किन्तु फरवरी 1913 में उनकी मृत्यु हो गयी।

पिता की मृत्यु के बाद भीम बडौदा महाराज की छात्रवृत्ति के आधार पर अमेरिका पढने चले गए। जुलाई 1913 में उन्होनें कोलंबिया विश्वविद्यालय (न्युयार्क) में राजनीति

संकाय में दाखिला लिया। अमेरिका का वातावरण उन्हे बहुत अच्छा लगा वहां कोई जातिगत भेदभाव नहीं थी। भीम सबके साथ बैठकर पढते, खुलकर मिलते बहुत बाते करते। वहां भारतीय छात्र नवल भटेना से उनकी मुलाकात हुयी बाद में दोनो एक कक्ष में साथ–साथ रहे। भीम पढाई के प्रति बहुत गंभीर थे सादा जीवन बिताते थे, भटकने और गुम हो जाने के लिए उनके जीवन में कोई गुंजाइश नहीं थी। 5 जून 1915 को भीम ने कोलंबिया विश्वविद्यालय से एम.ए. की परीक्षा पास की। इसके बाद वे पी.एच.डी. के लिए अध्ययन और लेखन में जुट गए। उन्होनें ''द नेशनल डिवाइडेंड ऑफ इन्डिया ए हिस्टोरिकल एण्ड एनेलिटिकल स्टडी'' नामक विषय पर थीसिस लिखी और उसे पी. एच.डी. के लिए कोलंबिया विश्वविद्यालय को दे दिया। जून 1916 में वे लंदन स्कूल ऑफ इकानॉमिक्स एण्ड पॉलिटिकल साइंस में अध्ययन करने के लिए वे लंदन चले गए।

1917 में कोलंबिया विश्वविद्यालय ने उन्हें पी.एच.डी. की उपाधि प्रदान की। जून 1917 में जब वे लंदन में अर्थशास्त्र में एम.एस.सी. की डिग्री के लिए अध्ययन कर रहे थे तब बडौदा महाराज ने उनकी छात्रवृति रोक दी और अम्बेडकर बीच में ही पढाई छोड वापस भारत आ गए।

बडौदा महाराज भीमराव के पढाई व ईमानदारी से बहुत प्रभावित थे इसलिए उन्होने भीमराव को सैन्य सचिव के पद पर नियुक्त किया। यहां 2 हजार रूपये वेतन व सभी सुविधाए थी। ऑफिस का चपरासी, उची जाति का था, वह न तो भीमराव को पानी पिलाता, ना ही फाइले हाथ मे देता। इस प्रकार जातीय अपमान को सहन करते हुए नौकरी की, किन्तू एक दिन वह अपने परिवार के लिए किराये से कमरा देख रहे थे, किसी ने नहीं दिया जबकी भीमराव जहां रहते थे वहां से भी कमरा खाली करा लिया, इस घटना से हताहत हो भीमराव ने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया। बाद में भीमराव बंबई के सीडेहॅाम कॉलेज ऑफ कॉमर्स एण्ड इकानोमिक्स में राजनीति व अर्थशास्त्र विषय के प्रोफेसर नियुक्त हो गए, किन्तु वहां भी जातीय भेदभाव के कारण त्यागपत्र देना पडा।

31 जनवरी 1920 को उन्होनें ''मूकनायक'' नामक एक मराठी अखबार का प्रकाशन शुरू किया। इसका उद्‌देश्य पिछडो की लडाई लडना था। इसमें अंबेडकर ने जातिवाद व छूआछूत की कठोर आलोचना की। अप्रेल 1920 में महाराज गायकवाड की मदद से अंबेडकर पुनः लंदन अधुरी पढाई पूरी करने चले गए। सितंबर 1920 में उन्होने लंदन स्कूल ऑफ इकोनोमिक्स में दाखिला लिया। यहां उन्होनें लंदन विश्वविद्यालय से एम.एस.सी. (अर्थशास्त्र) की डिग्री प्राप्त की और रूपये की समस्या पर थिसिस लिखी। साथ ही उन्होनें कानून की पढाई भी की। अप्रेल 1923 वे लंदन से पढाई खत्म कर वापस भारत आ गए।

बाबा साहेब के विचार :–

सामाजिक विचार :– व्यक्ति समूह समाज के बनता है। समाज कभी भी व्यक्ति से नहीं बनता, वह वर्ग से बनता है। प्रत्येक समाज के वर्ग अस्तित्व में होते है। व्यक्ति किसी न किसी वर्ग की इकाई बनकर ही जीना चाहता है। वर्ग जाति में रूपांतरित होते गए। वास्तव में जाति व वर्ग आमने–सामने रहने वाले पडोसी की तरह होते है। जाति की समस्या असैद्धान्तिक और व्यावहारिक रूप में एक विकराल समस्या है। मनु जाति व्यवस्था के जन्मदाता नहीं है। मनु के सैकडों वर्ष पूर्व जाति व्यवस्था अस्तित्व में थी। मनु ने जातीय संबंधी नियमों का केवल संकलन किया। भारतीय समाज सीढी–दर–सीढी का ऐसा सिलसिला है, जिसमें हर उपर की सीढी का आदमी हर नीचे की सीढी के आदमी को घृणा की दृष्टि से देखता है और नीचे की सीढी का आदमी अपने उपर की सीढी के आदमी को आदर की दृष्टि से देखता है। ऐसे समाज में समता, बंधुत्व और प्रजातंत्र को पनपने की रत्ती भर भी गुंजाईश नहीं है। समाज में जाति व्यवस्था तोडने के लिए एकमात्र उपाय है अंर्तजातीय विवाह। संबंधों के कारण ही आत्मीयता की भावना तैयार होती है। हिन्दू जाति का पालन करते है, इसका एकमात्र कारण हिन्दू मूलतः धार्मिक है। जाति को धार्मिकता से जोडा गया है। इसके विरोध में प्रखर बुद्विवादी और समतावादी समाज रचना की नितांत आवश्यकता है।

धार्मिक विचार :– धर्म ही जीवन है और जीवन ही धर्म है। जहां आज धर्म है वहा धर्म के झगडे है। ये झगडे आज से नहीं सदियों से है। किसी भी धर्म में मानवतावादी दृष्टिकोण का रत्ती भर भी विरोध नहीं है। फिर भी बराबर धर्मयुद्व होते रहे है। धर्म और समाज की विषमता की जड चातुर्वर्व्य व्यवस्था है। चातुर्वर्व्य ही अस्पृदश्यता की जननी है। एक धर्म में सबको समानता का अधिकार नहीं हो तो वह धर्म कहां का रह जाता है। एक सच्चा धर्म समान अवसरों की घोषणा व प्रतिष्ठापन करता है, बाकी सभी धर्म झुठे व बकवास है। बुद्व का धम्म परलोक के संबंध में नहीं है। इसका संबंध मात्र इहलोक से है। यह न स्वर्गवादी है, न नरकवारदी यह पृथ्वीवादी है। यह धम्म व्यक्तिगत मोक्ष की बात न कर, सामाजिक मुक्ति का संदेश देता है। धर्म तो मनुष्य के लिए है। धर्म के विकास के लिए उसे बलि का बकरा नहीं बनाना चाहिए।

आर्थिक विचार :– महारो के पास वतन भूमि का होना एक पुराना रिवाज था। जिसकी पुष्टि हिन्दू–मुस्लिम अभिलेखों से होती है। अंग्रेजी शासन ने भूमि पर अत्यधिक कर लादकर महारो को अपने अधीन बनाया। भारत में समस्त दरिद्र और दलित लोग गौरवा को ईश्वर का दंड मानकर चुपचाप भोग रहे है, वे उसे समाज व अर्थव्यवस्था की रन्णता नहीं मान रहे है। वे शोषण, अन्याय, अत्याचार,बलात्कार सहन कर लेंगे परन्तु न्यायालय नहीं जाएंगे। पुराने धंधे फिर से चलाना और नए शुरू करना यही सुधारात्मक उपाय है। जनता की उत्पादन शक्ति और कार्यक्षमता में वृद्वि करने हेतु तकनीकी शिक्षा संबंधी धंधों की शुरूआत करना आवश्यक है।

राजनीतिक चिंतन :– स्वसरकार पर्याप्त नहीं है, बल्कि एक अच्छी सरकार चाहिए, जो समाज के सभी वर्गो के प्रति प्रतिबद्व हों। भारत एक ऐसा राष्ट्र बनना चाहिए जिसमें प्रत्येक नागरिक के धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनीतिक अधिकार समान हो और हर एक को व्यक्तित्व के विकास के लिए उचित अवसर प्राप्त हों।

भारत में जाति प्रथा :– जाति की समस्यस सैद्वान्तिक और व्यावहारिक रू‍प में बहुत बडी है। जब तक भारत में जातिवाद है, हिन्दू बाहरी लोगो से अंतजार्तीय विवाह और अन्य सामाजिक संबंध स्वीकार नहीं करेंगे। जाति स्वयं में एक इकाई होने के कारण सामाजिक संसर्ग, सहभोज आदि स्वाभाविक रूप से अपने सदस्यों तक ही सीमित कर देती है। इस प्रकार डॉ. अंबेडकर के जीवन परिचय व विभिन्न प्रकार के विचारों को पढकर, जानकर तथा समझकर इनका वर्तमान परिस्थितियों के अनुसार यह अनुमान लगाया जा सकता है कि बाबा साहेब ने बचपन से जातिवाद के दंश को सहन करते हुए, विभिन्न प्रकार के अपमान को सहते हुए अपने लक्ष्य के प्रति समर्पण बनाये रखा। उन्होने एक जाति या वर्ग विशेष के लिए लाभ न कर सम्पूर्ण समाज व राष्ट्र हित में अपना योगदान दिया। इसलिए वर्तमान में हम बाबा साहेब के विचारों व आदर्शो को अपनाकर समाज सुधार व राष्ट्रहित में अपना योगदान दे सकते है।

उदेश्य :–

1. शैक्षिक सुधार हेतु प्रयास करना।
2. लोगो को अपने मौलिक अधिकार व मौलिक कर्तव्यों के लिए जागरूक करना।
3. समाज में जाति–प्रथा को दूर करने का प्रयास करना।
4. धार्मिक सुधार हेतु प्रयास करना।
5. दलित उत्पीडन को रोकने का प्रयास करना।

प्रकल्पनाएँ (Major Hypothesis)

1. जाति प्रथा के दूर होने से समाज में समानता व भाईचारों की भावना स्थायी होगी।
2. मौलिक अधिकार व कर्तव्यों को जानने के बाद लोग उत्पीडन व शोषण के विरूद्व आवाज उठायेंगे।
3. शैक्षिक व धार्मिक सुधार से सामाजिक सुधार को बल मिलेगा।
4. युवा वर्ग बाबा साहेब के विचारों और आदर्शो के प्रति प्रोत्साहित होंगे।

अनुसंधान पद्वति (Research-Methodology)

प्रस्तावित शोध प्राथमिक एवं द्वितीयक समको पर आधारित होगा। चयनित सूचना दाताओं से साक्षात्कार, अनुसूची द्वारा सामाजिक –आर्थिक पृष्ठभूमि में सहभागिता, जागरूकता आदि से संबंधित तथ्यों का संकलन किया जाएगा। प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक शोध रचना

का उपयोग करना भी उपयुक्त है क्योंकि यह शोध सामाजिक–आर्थिक व शैक्षिक कारको का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करने का प्रयास है। प्रस्तुत शोध में आनुभाविक शोध रचना का भी उपयोग किया जाएगा।

वर्तमान शोध का महत्व (Importance of Present Research)

वर्तमान समय में समाज में अभी भी कई प्रकार की सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक और आर्थिक विसंगतियां है। अतः इन्हे दूर करने के लिए तथा इन समस्याओं के स्थायी समाधान हेतु हमे बाबा साहेब के विभिन्न प्रकार (सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक) विचारों का अध्ययन करना जरूरी है। हमे लोगों को व आज के युवा वर्ग को भी बाबा साहेब के विचारों के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है। संविधान निर्माता बाबा साहेब ने समाज हित व राष्ट्र हित के लिए जो प्रयास किए, उनका अध्ययन कर हम भी समाज हित व राष्ट्र हित में अमूल्य योगदान दे सकते है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :–

BIBLOGRAPHY

1. भदंत आनंद कौशल्यायन : यदि बाबा न होते, भिक्खु निवास प्रकाशन 1768
2. गुर्जर लिलाराम : भारतीय समाजवादी चिंतन, पंचशील प्रकाशन जयपुर 1786
3. जैन, यशपाल : कालयत्री गांधी संस्ता साहित्य मंडल, नई दिल्ली 1776
4. जाटव, डी.आर. : डॉ. बी. आर. अम्बेडकर का राजनितिदर्शन, समता साहित्य सदन, जयपुर, 1990
5. जाटव, डी.आर. : डॉ. बी.आर. अम्बेडकर का समाज दर्शन जयपुर 1990
6. Ambedkar B.R. The Problem of the Rupee-P.S.King & Sons Ltd. - 1923.
7. Ambedkar B.R. Evolution of provincial Finance in British India- P.S. King & Sons Ltd.m Londan – 1925
8. Ambedkar B.R. Annihilation of Castes, Thaker & Co. Ltd. Bombay, 1937
9. Ambedkar B.R. Fedration Versus freedom – R.K. Tatnis, Bombay-1939
10. Mr. Gandhi and emancipation of the untouchables (First issued as the untouchables & the Indian Constitution)